

(Conj. für कृत). लावण्याम्बुतरंगिण्या कृतः (so schreiben wir) KATHÁS. 27, 65. अथैन weit fortgeführt 32, 106. BHÁG. P. 9, 14, 35. — 5) abreißen, ablösen, abtrennen, abschiessen: करिष्ये चौरुवेगेन लतानां विविधं पुष्पम् R. 5, 3, 43. (वायुः) वृत्ताच्छूयं करति पुष्पमनोककानाम् RAGH. 3, 69. शरेण मक्षाशनिघ्नम् 3, 56. insbes. den Kopf: आदाय परशुं रामो मातुः शिरो ऽकरत् MBH. 3, 11084 (S. 372). कायात् 7, 1367. 9, 1094. BHÁG. P. 2, 7, 33. 4, 5, 24. 7, 8, 14. 8, 11, 6 (med.). 9, 15, 35. BHÁTT. 15, 116. तत्तदेव (अङ्गं) करेतस्य पार्थिवः abhauen, — lassen M. 8, 334. — 6) act. med. in Empfang nehmen (eine Gabe), in den Besitz von Etwas treten (insbes. als Erbe), rechtmässiger Weise sich aneignen: नाननुशिष्य करेत ÇAT. BR. 14, 6, 10, 4. ÁÇV. GRH. 4, 8, 27. fg. LĀTJ. 9, 2, 12. 9, 23 (an beiden Stellen v. l. med.). 16. KAUC. 37. KAUSH. UP. 1, 1. रथं करेत चाधर्युः, हेता वापि करेदशम् M. 8, 209. ततो विंशं नृपो करेत् 398. दायम् 9, 77. 92. 117. 124. 130. fgg. 135. fg. 141. fg. 145. 151. 153. 179. 185. 189. 198. 216. fg. द-स्युनिष्क्रिययास्तु स्वमन्नीवन्कर्तुमर्हति 11, 18. माताप्यंशं समं करेत् JĀGŪ. 2, 123. यन्मास्ति करस्व तत् PĀNĪAT. III, 191. नातिसावत्सरी वृद्धिं करेत् M. 8, 153. स करतु सुभगपताकाम् DAÇAK. 68, 2. KATHÁS. 3, 48. यो करेद्व-लिषड्भागम् Spr. (II) 218. अष्टौ मासान्यथादित्यस्तोयं करति रश्मिभिः । तथा करेत्कारं राष्ट्रात् Abgaben erheben 743. भित्ताकृताः सक्तवः 7337. hernehmen —, sich Etwas holen von (abl.) VARĀH. BRH. S. 81, 24. mit-nehmen von MBH. 31. कन्यामृतमतीम् heimführen, heirathen M. 9, 93. — 7) in seine Gewalt bekommen, überwältigen, Meister werden über, Jmd gewinnen: त्रिभिः क्रमैश्च त्रींल्लोकाञ्चकार त्रिदिवालयम् HARIV. 4166. पुरम् BHÁG. P. 4, 27, 15. पूर्वाभ्यासेन तेनैव क्रियते क्षयशो ऽपि सः BHÁG. 6, 44. इन्द्रियाणि प्रमाथीनि करति प्रसभं मनः 2, 60. BHÁG. P. 7, 12, 7. क्रि-यमाणानि विषयैरिन्द्रियाणि M. 6, 59. कथं नाम मक्षात्मानो क्रियते वि-षयारिभिः KĀM. NĪTIS. 3, 11. शब्दाद्यैर्क्रियते न च MĀRK. P. 40, 36. (तम्) मृगया जकार चतुरेव कामिनी RAGH. 9, 69. न निद्रापि जकार तम् KATHÁS. 67, 23. जह्रे आतो मतश्च निद्रया 28, 122. 72, 181. 77, 57. सप्राणं कृते मृत्युः, अघ्राणान्प्राणवञ्छोकानकीर्तिकृते सदा Spr. (II) 6834. स्वभावेन करन्मित्रम् 7299. R. 5, 83, 7. KĀM. NĪTIS. 13, 25. तवामात्या कृता धनिः (जनैः ed. Bomb.) gewonnen, bestochen MBH. 2, 240. संजीवककृतः स्वामी नावामवेवते KATHÁS. 60, 73. — 8) hinreißen so v. a. ganz in Beschlag nehmen, von allem Andern abwenden, entzücken (oft zugleich rauben, mit sich fortnehmen): सा तस्य दृष्टेव (so zu lesen) मनो जकार MBH. 13, 1393. R. 3, 38, 18 (med.). 48, 17. 49, 23. 5, 22, 29. R. 6, 20. Spr. (II) 2325. 3250. KATHÁS. 14, 78. 45, 299. BRAHMA-P. in LA. (III) 53, 10. BHÁG. P. 3, 12, 28. 4, 20, 37. 9, 10, 54. मानसम् KATHÁS. 25, 165. कृदयम् Spr. (II) 780. Z. d. d. m. G. 27, 25. KATHÁS. 11, 83. चेतः Spr. (II) 5706. 7259. MĀRK. P. 61, 32. चित्तम् R. 5, 31, 36. KATHÁS. 37, 14. चक्षुषि च मनोसि च MBH. 1, 7695. ईक्षणं KATHÁS. 47, 109. कृतात्मन्, कृतप्राण BHÁG. P. 3, 25, 36. तवास्मि गीतरागेण कारिणा प्रसभं कृतः । एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेषा-तिरंक्षसा ॥ hingerissen, fortgerissen ÇĀK. 5. कं करेदेष बर्ही VIKR. 85. स्वैरालाया करति मृगीदशाम् Spr. (II) 4218. 4667. करत् = मनोकर, कारिन् BHÁG. P. 3, 15, 41. — 9) abnehmen, wegnehmen, benehmen, entfernen, verscheuchen, zu Nichte machen: प्रालियास्रं कमलवदनान्नलिन्याः MBH. 40. भुवो भरम् BHÁG. P. 1, 3, 23. स्वास्त्रिः कुचकुङ्कुमानि 3, 1, 7. जीवितम् HARIV. 10313 (med.). प्राणान् R. 3, 31, 39. 62, 4. आयुः BHÁG. P. 2, 3, 17.

VII. Theil.

4, 29, 54. Spr. (II) 3900. वीर्याणि MBH. 9, 220 (med.). मुखस्य लक्ष्मीम् Spr. (II) 3910. 7432. RĀGA-TAR. 1, 239. दत्तैश्चतुर्भिः श्वेताद्रमैश्चिम् BHÁG. P. 8, 8, 4. श्रियं श्रियः BHÁTT. 3, 71. मम त्रयकीर्तिम् ÇĀC. 9, 63. दर्पम् MBH. 2, 808. गर्वम् R. 3, 42, 57. इच्छाम् MBH. 37. लज्जाम् RAGH. 14, 16. बुद्धिम् Spr. (II) 1112 (med.). दर्शने कृते (so zu lesen) चित्तं स्पर्शने कृते ब-लम् । मैथुने कृते वीर्यं नारो 2719. प्रियस्य गमनम् so v. a. hintertreiben 4291. मतिम् BHÁG. P. 6, 18, 29. 9, 6, 52. चेतः R. 2, 48, 18. चेतनाम् 3, 49, 22. KATHÁS. 13, 147. 16, 49. BHÁG. P. 4, 22, 30. चित्तम् Spr. (II) 6519. 6353. KATHÁS. 39, 188. विवेकम् BRAHMA-P. in LA. (III) 56, 22. स्वैर्यम् BHÁG. P. 1, 16, 36. धर्मम् 3, 9, 13. अश्वकाशम् KATHÁS. 32, 108. सेवा मानम-खिलम्, श्योतन्ना तमः, जरा लावण्यम्, करिकरकथा इरितम् Spr. (II) 7173. सुरतगलानिम् MBH. 32. व्ययाम् RAGH. ed. Calc. 12, 78. दुःखम् R. 2, 21, 18. Spr. (II) 1138. ज्ञाद्यं धियः 2376. भयं भूतानाम् 6823. तापं देहिनाम् 7098. कम्पमाश्रमवासिनाम् RAGH. 18, 24. मन्युं धरित्र्याः VARĀH. BRH. S. 32, 6. कुमतिम् BHÁG. P. 1, 9, 36. एनः M. 4, 200. किल्लिषणम् R. 4, 17, 58. BHÁG. P. 9, 9, 6. 3, 13, 36. 4, 14, 46. रोगम् KATHÁS. 28, 168. SARVADARÇANAS. 99, 10. कुवस्त्रं कृते तेजः कुभायां कृते गृहम् । कुभायं कृते बीजं कुपुत्रे कृते कुलम् ॥ Spr. (II) 1844. जरा देहम् 2839. सर्वे कालेन सृष्यते क्रियते च पुनः पुनः MBH. 13, 56. सृजन्नतन्करन्विषयम् BHÁG. P. 4, 7, 51. सृजसि पासि करसि 6, 9, 33. — 10) zurückziehen, zurückhalten: स मे ऽक-रकरम् MBH. 5, 7245. न शशाक ततो कर्तुं दर्शं मयामिवात्र सः R. 3, 52, 19. तदूतो ऽयं शुकः समाश्रास्य तावद्विपतां यावदुर्गं सञ्जीक्रियते Hir. 90, 9. दद्या कन्यां कर्न् JĀGŪ. 2, 146. — 11) hinziehen (von einer Zeit oder einem Ort zum andern): उदकधाराम् AIR. BR. 7, 12. आङ्गतिभिरं-पूर्वपत्तं करेयुः (= नयेयुः Comm.) ÁÇV. Ç. 3, 10, 18. कालम् die Zeit hin-ziehen, Zeit gewinnen KATHÁS. 31, 68. 32, 28. — 12) dividiren VARĀH. BRH. S. 8, 22. 53, 17. GOLĀDHJ. MADHJAG. 10. 12. 21. ĀRJABH. 2, 8. 15. 4. 25. fgg. भागं कर dass. 2, 4. — करिष्ये MĀRK. P. 133, 15 fehlerhaft für कृनिष्ये. — Vgl. श्येनकृत.

— caus. कारयति, अजीकरत् Schol. zu P. 3, 1, 48. 7, 4, 94. 1) tragen las- sen: कारयति भारं देवदत्तम् oder देवदत्तेन Schol. zu P. 1, 4, 53. शैलानकार-यत्कीशानृतेर्वृत्तानञ्जीकरत् VOP. 5, 5. अग्निं वा (so zu trennen) कारयेदेनम् M. 8, 114. — 2) bringen —, verbringen lassen: अन्नम् LĀTJ. 1, 1, 12. कृषिधी- नानि 8, 9, 17. कारं च हेमसूत्रं च भार्यायि कारय R. 2, 32, 7. HARIV. 6454 nach der Lesart der neueren Ausg. ज्ञीमतेन स्वकुशलमयीं कारयिष्यन्प्रवृत्तिम् MBH. 4. — 3) entreißen —, rauben lassen: अन्यायेन कृता भूमिरन्यायेन तु कारिता । कर्तो कारयतश्च दकृत्यासप्तमं कुलम् ॥ Journ. of the Am. Or. S. 7, 43. — 4) entreißen, sich zueignen: तस्य धनेद्रिकम् KATHÁS. 101, 342. — 5) sich entreißen lassen: खड्गं चाञ्जीकरद्विषा BHÁTT. 15, 84. einbüßen, verlieren (insbes. im Spiel): दारान् MAHĀNĀT. 181. द्यूतेन धनं सर्वमकार-यत् KATHÁS. 19, 18. 52, 253. 121, 73. 88. धनहीनेन देहा ऽपि कार्यते 19, 28. प्राप्ते ऽप्यर्थः लणादेव कार्यते मन्दबुद्धिभिः 64, 31. — 6) partic. कारि- त Schol. zu P. 6, 4, 52. a) überbracht: दूतकारितैः कल्पद्रुमविभूषणैः KUMĀRAS. 2, 39. — b) was man hat rauben lassen; s. u. 3). — c) ge- raubt, entführt KATHÁS. 7, 99. 10, 152. — d) verloren, eingebüsst (ins- bes. im Spiel): कपठकः कपठात् KATHÁS. 54, 114. द्यूतेन MĀRK. P. 8, 149. KATHÁS. 20, 91. 24, 59. 197. 26, 195. दीनारान्कारि- तप्रसात् 33, 156. 56, 300. 302. fg. RĀGA-TAR. 4, 564. 6, 49. 54. VER. in